

# डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 3, एक परिवर्तनकारी गवाह, उपदेश की भूमिका। © 2024

केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 3 है, एक परिवर्तनकारी गवाह, उपदेश की भूमिका।

धर्मोपदेश का शीर्षक एक परिवर्तनकारी गवाह है, और हम मत्ती 28 से शुरू कर रहे हैं, पद 16 से शुरू करके 20वें पद तक जा रहे हैं।

सदियों से, ईसाइयों ने यीशु की इस आज्ञा में सुसमाचार के शुभ समाचार के केंद्रीय महत्व को पहचाना है, जो उनकी सांसारिक सेवकाई के समापन पर दी गई थी। मत्ती 28 में, जिसे हम महान आदेश कहते हैं, इसलिए जाओ और सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाओ। फ्रांस के ल्योन शहर के वाल्डेज़, वाल्डो नामक व्यक्ति के अनुयायियों की तुलना में किसी भी ईसाई समूह ने 12वीं शताब्दी में इस आज्ञा को अधिक गंभीरता से नहीं लिया।

इस धर्मोपदेश में, हम इस बात की जांच करेंगे कि वाल्डेज़ ने किस तरह से महान आदेश की व्याख्या की और उसे अपने जीवन में लागू किया और कैसे इस एक व्यक्ति की गवाही ने एक ईसाई आंदोलन की शुरुआत की जो 12वीं शताब्दी में शुरू हुआ और आज भी जारी है। जब आप यह कहानी सुनते हैं, तो मैं आपको विश्वास की इस गवाही के लिए धन्यवाद देने और खुद से पूछने के लिए आमंत्रित करता हूँ कि आज हम अपने जीवन में सुसमाचार के वचन और गवाही को और अधिक गंभीरता से लेने के लिए क्या कर सकते हैं? जिसे अंततः वाल्डेन्सियन आंदोलन या वाल्डेन्सियन वंश के रूप में जाना जाता है, वह काफी मासूमियत से तब शुरू हुआ जब वर्ष 1172 में वाल्डेज़ नामक एक धनी व्यक्ति ने शास्त्रों द्वारा अपने धन को त्यागने और आम लोगों की भाषा में ईश्वर के वचन की घोषणा करने के लिए बुलावा स्वीकार किया। वाल्डेज़ फ्रांस के ल्योन में एक व्यापारिक नेता और रोमन कैथोलिक चर्च के एक आम नेता थे।

अपनी भाषा में धर्मग्रंथों का अध्ययन करके ईश्वर के बारे में अधिक जानने की इच्छा को महसूस करते हुए, वाल्डो ने दो चर्च अधिकारियों को उनके लिए नए नियम के पूरे खंडों का अनुवाद करने के लिए भुगतान किया। अध्ययन और प्रार्थना के बाद, उन्हें मैथ्यू 19:16 से 21 और मैथ्यू 28, 18 से 20 द्वारा दोषी महसूस हुआ और उन्होंने अपनी संपत्ति बेच दी और ल्योन में अपने पड़ोसियों को सुसमाचार का प्रचार करना शुरू कर दिया। 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पश्चिमी यूरोप में, ईसाई धर्म के गहरे अर्थ को जानने के लिए आम लोगों के बीच एक तीव्र इच्छा थी।

लोग मार्गदर्शन और शिक्षा के लिए चर्च की ओर रुख करते थे, लेकिन रोमन कैथोलिक चर्च ने विश्वास को सिखाना अपना प्राथमिक उद्देश्य नहीं समझा। वास्तव में, चर्च पदानुक्रम और ज्ञान को नियंत्रित करने की उसकी इच्छा ने आम लोगों की इस पहचानी गई ज़रूरत को संबोधित करने के खिलाफ सक्रिय रूप से काम किया। प्रारंभिक मध्ययुगीन चर्च में, केवल बिशप, आर्कबिशप और पोप ही ईश्वर के वचन का प्रचार करते थे।

इसलिए, किसी भी ईसाई के लिए अपने ही पैरिश में उपदेश सुनना वाकई एक दुर्लभ घटना थी। उन दिनों यह एक आम अनुभव था कि ज्यादातर ईसाइयों ने कभी एक भी उपदेश नहीं सुना था या शायद अपने जीवनकाल में सिर्फ एक ही उपदेश सुना था। लेकिन जब बिशप उपदेश देते भी थे, तो उपदेश लैटिन में दिया जाता था।

ईसाई समुदाय के केवल सबसे अधिक विद्वान 1% लोग ही धर्मोपदेश में दिए गए संदेश को समझ सकते थे। परमेश्वर के वचन के अर्थ की अस्पष्टता ने चर्च पदानुक्रम को यथास्थिति बनाए रखने में मदद की, जो उनकी अपनी गोपनीयता में लिपटी हुई थी। चर्च के नेताओं का मानना था कि परमेश्वर के अधिकांश वचन को केवल कुछ विशेषाधिकार प्राप्त चर्च नेताओं और विद्वानों द्वारा ही समझा जाना था, जिन्हें लैटिन का व्यापक ज्ञान था।

उपदेश की दुर्लभता, साथ ही लैटिन की समझ की कमी के कारण, ईश्वर के वचन का अर्थ, जैसा कि यह किसी के जीवन पर लागू होता है, आम लोगों के जीवन में बहुत कम या कोई प्रासंगिक भूमिका नहीं निभाता है। 12वीं शताब्दी के रोमन कैथोलिक चर्च में पैरिश पादरी की प्राथमिक भूमिका सात संस्कारों को करने तक सीमित थी। उस समय के चर्च के आधिकारिक संस्कारों में तीन पादरी संस्कार शामिल थे: एक पश्चाताप का, बीमारों का अभिषेक और अंतिम संस्कार, पवित्र सेवा के दो संस्कार, जिसमें पवित्र आदेश शामिल थे, जो मंत्रालय के लिए समन्वय है, और 12वीं शताब्दी की शुरुआत में विवाह का संस्कार जोड़ा गया, और बपतिस्मा और यूचरिस्ट, प्रभु भोज के दो मौलिक शास्त्रीय संस्कार।

वाल्डो के समय में, चर्च का हर सदस्य जो हर रविवार को पूजा में शामिल होता था, उसे पादरी से प्रभु भोज का संस्कार मिलता था, जो केवल रोटी के रूप में होता था, जबकि शराब पादरी और अन्य चर्च अधिकारियों के लिए आरक्षित थी। प्रभु भोज के आसपास के सामूहिक प्रार्थना समारोह का संचालन लैटिन में किया जाता था, इसलिए लोगों को पता नहीं था कि पादरी क्या कह रहा है और उन्हें केवल एक अस्पष्ट धारणा थी कि सामूहिक प्रार्थना के दौरान रोटी और शराब किसी रहस्यमय तरीके से यीशु का भौतिक शरीर और खून बन गए। प्रभु की मेज पर क्या कहा जा रहा था, इसकी समझ की कमी ने एक लोकप्रिय वाक्यांश के विकास को जन्म दिया, जिसका उपयोग जादूगरों और बच्चों द्वारा युगों से किया जाता रहा है, जिसे आज भी एक जादुई मंत्र, होकस पोकस डोमिनोकस के रूप में पहचाना जाता है

यह रोमन कैथोलिक मास में इस्तेमाल किए गए ल्यूक के सुसमाचार से जीसस को उद्धृत करने वाला लैटिन अनुवाद है, जिसका अनुवाद है, यह मेरा शरीर है, डोमिनी का अर्थ है भगवान। चर्च की मान्यता के कारण कि ईसाई धर्म के बारे में अधिकांश ज्ञान चर्च के धर्मशास्त्रीय रूप से प्रशिक्षित सेवकों द्वारा गुप्त ट्रस्ट में रखा जाना चाहिए, चर्च के नेताओं द्वारा यूचरिस्ट के उत्सव के अर्थ पर आम लोगों को शिक्षित करने के लिए कोई वास्तविक प्रयास नहीं किया गया था। 1184 से पहले, कैथोलिक चर्च पदानुक्रम के लिए वाल्डेस का मुद्दा एक देहाती मुद्दा था, मिशनरी गरीबी के लिए एक बहुत ही शक्तिशाली आंतरिक आह्वान और संस्थागत चर्च के अनुष्ठान कानूनी अधिकारों के बीच संघर्ष।

वाल्देस और उनके अनुयायियों से अपेक्षा की जाती थी कि वे पदानुक्रम के अधिकार क्षेत्र के प्रति अपना उत्साह दिखाएँ, जो प्रेरितिक गरीबी या उनके पुनर्जन्म वाले मिशन की भावना के प्रति उनकी उत्कट आकांक्षा को साझा नहीं करता था। गरीबी की शपथ लेने और स्थानीय भाषा में लोगों को सुसमाचार सुनाने के वाल्देस के दोहरे मंत्रालय ने ल्योन शहर की जनता में एक नस को छुआ, और जल्द ही, शहर के लोगों की बढ़ती संख्या उनके उपदेशों के लिए आने लगी। अगले कई वर्षों में, उन्होंने पुरुष और महिला अनुयायियों का एक समूह इकट्ठा किया, एक सोसाइटास वाल्डेसियाना, गरीब घुमंतू प्रचारकों का एक समाज जो वाल्डो का अनुसरण करता था और ल्योन शहर के चारों ओर पवित्र ग्रंथों का प्रचार करता था।

वाल्डो के उपदेश ने रोमन कैथोलिक पदानुक्रम में भी गहरी छाप छोड़ी। वाल्डो और उनके अनुयायियों के उपदेशों के प्रति ल्योन के बिशप द्वारा कड़े विरोध के कारण, वाल्डो ने 1179 में पोप अलेक्जेंडर III से उपदेश देने की अनुमति मांगी। पोप वाल्डो की ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने वाल्डो को आशीर्वाद दिया और चूमा।

हालाँकि, वाल्डो और उनके अनुयायियों को पोप द्वारा निर्देश दिया गया था कि वे केवल बिशप के स्पष्ट निमंत्रण पर ही प्रचार करें। यह अधिकार नहीं मिला। ल्योन के बिशप अड़े हुए थे और उन्होंने वाल्डो के अनुयायियों को प्रचार करने की अनुमति नहीं दी।

सुसमाचारों और यीशु के जीवन में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका की खोज करते हुए, वाल्डो और उनके अनुयायियों ने माना कि यीशु ने मैरी मैग्डलीन को बुलाया और पुरुष शिष्यों को पुनरुत्थान की खबर की गवाही देने के लिए कहा। उन्होंने सुसमाचारों और पॉल के पत्रों में अच्छी खबर का प्रचार करने वाली महिलाओं के कई अन्य उदाहरणों का भी हवाला दिया। वाल्डेन्सियन द्वारा कैनन कानून के खिलाफ शुरू की गई सबसे बड़ी चुनौती वाल्डेन्सियन सोरोरेस, बहनों का प्रचार था।

भले ही महिला प्रचारक भाइयों की तुलना में बहुत कम संख्या में थीं, लेकिन पहले वाल्डेन्सियन समुदाय में लैंगिक समानता अपने आप में एक सिद्धांत से कहीं ज़्यादा थी। यह उनकी अंतर्निहित मूल्य प्रणाली का एक हिस्सा था। उन्हें जो मिशन सौंपा गया था, उसमें सभी समान थे।

मदर चर्च के खिलाफ इन उल्लंघनों को देखते हुए, वाल्डो और उनके अनुयायियों को 1184 में नए स्थापित पोप लुसियस द्वारा चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया था। वाल्डेन्सियन ने चर्च के भीतर उद्देश्य और दिशा का गहरा संकट पैदा कर दिया, क्योंकि वाल्डो और उनके अनुयायी खुद रोमन कैथोलिक चर्च से अलग नहीं हुए थे। वाल्डो के अनुयायी, जिन्हें इस स्तर पर ल्योन के गरीब के रूप में जाना जाता था, अभी भी रोमन कैथोलिक विश्वास प्रणाली के प्रति निष्ठा बनाए रखते थे।

वे आस्था के आवश्यक सिद्धांतों, पवित्र त्रिदेव और ईश्वर के वचन के अधिकार का पालन करते थे। वे यीशु मसीह के पूर्ण मानव, पूर्ण दिव्य स्वभाव में विश्वास करते थे और अपनी पूजा में प्राचीन प्रेरितिक पंथ का उपयोग करते थे। ल्योन के गरीबों ने सात संस्कारों या संतों की पूजा में विश्वास पर सवाल नहीं उठाया।

वाल्डो रोमन चर्च को मंत्रालय की वैध अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार करने के लिए दो भेदों को प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था, जिसमें लोगों की मूल भाषा में उपदेश देना और इस बात पर जोर देना शामिल था कि हर आम व्यक्ति, पुरुष और महिला, को ईश्वर के वचन की घोषणा करने का अधिकार है। प्राचीन समय में, यहूदी धर्म ने हिब्रू की पवित्र भाषा को उस भाषा के रूप में स्थापित किया जिसमें हिब्रू बाइबिल लिखी गई थी, जिसके द्वारा ईश्वर से और उसके बारे में सभी बातचीत आस्था समुदाय के भीतर संप्रेषित की जाती थी। इस्लाम ने अरबी के उपयोग के माध्यम से अपने आस्था समुदाय के भीतर ऐसा ही किया।

यहूदी धर्म और इस्लाम के पवित्र ग्रंथों में बहुत औपचारिक भाषाएँ बनाकर, आस्था की पवित्रता और सभी पवित्र चीजों को रोज़मर्रा की अपवित्र चीजों से अलग रखा गया। इन पवित्र भाषाओं के इस्तेमाल के समय के साथ होने वाले प्रभाव ने दोनों धर्मों के आम लोगों को ईश्वर और आस्था समुदाय के पदानुक्रम के साथ किसी भी तरह के व्यक्तिगत संबंध से अलग कर दिया। यीशु एक ऐसी दुनिया में रहते थे जहाँ बाइबल का सार्वजनिक वाचन केवल हिब्रू में किया जाता था, लेकिन उनके आस-पास के आम लोग अरामी भाषा बोलते थे, जिससे पवित्र शास्त्रों के अर्थ और बारीकियों की गहराई केवल शिक्षित अभिजात वर्ग के लिए उपलब्ध थी।

हालाँकि यीशु हिब्रू बाइबिल के साथ काम करते समय हिब्रू भाषा का इस्तेमाल कर सकते थे और बोल सकते थे, लेकिन अपने शिष्यों को पढ़ाते समय, उन्होंने उन्हें अरामी भाषा में पढ़ाया, जिसमें रोज़मर्रा की दृष्टांत, छोटे उपदेश और लोगों की आम भाषा अरामी में आसानी से याद रखने वाली प्रार्थनाएँ शामिल थीं। अपने समय के आम लोगों के साथ स्थानीय भाषा में ईश्वर के बारे में यीशु के संचार ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए ईश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध और आस्था को एक बार फिर सुलभ बना दिया, चाहे उसकी शिक्षा का स्तर कुछ भी हो। आज यह विडंबनापूर्ण लगता है कि रोमन कैथोलिक चर्च यीशु मसीह की सेवकाई के इस आवश्यक घटक को अनदेखा कर देगा।

लेकिन वाल्डो और उनके अनुयायियों के समय तक, रोमन चर्च ने ईश्वर से और उसके बारे में सभी संचार में एक औपचारिक धार्मिक भाषा, लैटिन को दृढ़ता से बहाल कर दिया था। ईसाई धर्म में लैटिन को एक पवित्र भाषा के रूप में स्थापित करके, जिसके द्वारा ईश्वर के वचन का संचार किया जाता था, और पूजा की स्थापना की जाती थी, रोमन चर्च पदानुक्रम ने एक बार फिर ईश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध में बाधाएं खड़ी कर दीं, जिसे यीशु ने बहुत पहले ही तोड़ दिया था। यीशु के दिनों में हिब्रू भाषा की तरह, लैटिन की औपचारिकता ने शास्त्र के संदेश को लैंग्वेडोक से अलग कर दिया, जो ल्योन के आसपास के क्षेत्र के लोगों की भाषा थी, जिससे शास्त्र शिक्षित अभिजात वर्ग को छोड़कर सभी के लिए दुर्गम हो गया।

वास्तव में, रोमन चर्च ने उन सभी लोगों को निरक्षर करार दिया जो लैटिन में पढ़ और लिख नहीं सकते थे, चाहे वे स्थानीय भाषा में पढ़ और लिख सकते हों या नहीं। परिणामस्वरूप, औपचारिक रूप से प्रशिक्षित वाल्डेन्सियन प्रचारकों में से बहुत कम को छोड़कर सभी को चर्च ने निरक्षर होने के कारण अस्वीकार कर दिया। अपने समय की स्थानीय भाषा में बाइबल की व्याख्या करके, वाल्डो यीशु मसीह की सेवकाई में काम करने वाले आवश्यक सिद्धांतों में से एक को फिर से स्थापित कर रहा था, जो सुनने वाले दर्शकों की भाषा में परमेश्वर की खुशखबरी का प्रचार करना है।

लोगों की भाषा में पवित्र शास्त्रों को संप्रेषित करने के लिए वाल्डो की वापसी मध्ययुगीन ईसाई धर्म के लिए गहन निहितार्थों का उपहार थी। आस्था, एक बार फिर, कुछ और अधिक व्यक्तिगत और साथ ही, प्रकृति में गहन रूप से सामुदायिक बन गई क्योंकि इसे सभी के लिए समझ में आने वाले शब्दों में संप्रेषित और व्यक्त किया जा सकता था। रोमन चर्च की पवित्र भाषा लैटिन से प्रोवेन्सल की आम भाषा में शास्त्रों की व्याख्या करके, ल्योन, दक्षिण-पूर्वी फ्रांस और उत्तर-पश्चिमी इटली के आसपास के अल्पाइन क्षेत्र में, जिसे उस समय स्थानीय रूप से ओसीटानिया नामक क्षेत्र के रूप में जाना जाता था, उन्होंने बाइबल या जनता को समझने के लिए दरवाजे खोले।

ओसीटानिया का झंडा आज भी कई वंशजों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जिन्हें अपने वाल्डेन्सियन और क्षेत्रीय जड़ों पर गर्व है। वाल्डो ने यीशु की शिक्षाओं की शाब्दिक व्याख्या की घोषणा की, जिसे वाल्डेन्सियन प्रचारकों द्वारा गरीबी और विनम्र नौकरशाही के जीवन में अपनाया जाना था। इसके विपरीत, रोमन कैथोलिक चर्च के धनी पादरी गरीबी की शपथ लेने या लोगों की भाषा में उपदेश देने के लिए लगभग तैयार नहीं थे।

स्थानीय भाषा में यीशु की शिक्षाओं की शाब्दिक व्याख्या करने वाले वाल्डेन्सियन के विपरीत, बिशप आमतौर पर लैटिन में अलंकारिक उपदेश देते हैं। उन्हें यीशु की शिक्षाओं का अनुकरण करने या उन शिक्षाओं को आम लोगों तक पहुँचाने की कोई बाध्यता महसूस नहीं हुई। इसके विपरीत, वाल्डो के अनुयायियों ने अपने उपदेश के प्राथमिक जोर के रूप में प्रत्येक शिष्य के जीवन में यीशु की शिक्षा को अपनाने पर जोर दिया और यीशु की शिक्षाओं को प्रभु के उपदेश कहा।

उनका यह भी मानना था कि घोषित वचन को उपदेशक द्वारा लागू किया जाना चाहिए और यीशु के उपदेशों को उनके अनुयायियों द्वारा विनम्रता और गरीबी के जीवन के माध्यम से अपनाया जाना चाहिए। इसने ल्योन के गरीबों और कई रोमन कैथोलिक बिशपों की भव्य जीवन शैली के बीच एक बहुत ही स्पष्ट अंतर पैदा किया, जो अपने समय के सबसे धनी लोगों में से थे। बिशप, कई पुजारियों के साथ, अक्सर शराब पीकर और अनैतिक व्यवहार में लिप्त रहते थे जो एक धार्मिक नेता के लिए उचित नहीं था।

परिणामस्वरूप, न तो बिशपों का संदेश और न ही उनकी प्रदर्शित जीवनशैली लोगों के दिलों में जड़ जमा पाई। वाल्डो ने इस बात पर जोर दिया कि प्रचार करना अपने आप में एक पवित्र आह्वान है जो ईश्वर की ओर से आता है। उनका मानना था कि प्रचार करने के लिए बुलाए गए व्यक्ति को सिर्फ उसी कर्तव्य के लिए अलग रखा जाना चाहिए।

रोमन चर्च के मठवासी प्रचार में आह्वान की इस केंद्रित भावना की मिसाल थी। हालाँकि, ल्योन के गरीब लोग अपने उपदेश को साथी भिक्षुओं या चर्च के अधिकारियों को नहीं बल्कि आम जनता को निर्देशित करने वाले पहले व्यक्ति थे। 1182 में पोप द्वारा बहिष्कार के समय तक, वाल्डो के साथियों ने न केवल आधिकारिक उपदेश की अनुपस्थिति के बावजूद बल्कि ठीक उसके कारण ही प्रचार करने के लिए आह्वान महसूस किया था।

परिणामस्वरूप, बहिष्कार ने वाल्डो के अनुयायियों को उनके आह्वान पर डटे रहने के लिए और भी अधिक प्रोत्साहित किया। जब पोप द्वारा उन पर मुकदमा चलाया गया, तो वाल्डो ने स्वयं ल्योन के गरीबों के उपदेश की आधिकारिक चर्च निंदा का उत्तर देते हुए अधिनियम 5, 27-30 से उद्धृत करके परमेश्वर के प्रति उनकी आज्ञाकारिता को उचित ठहराया। इसमें कहा गया है कि हमें किसी भी मानवीय अधिकार के बजाय परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए।

लेकिन बाइबिल के उस जवाब का हवाला देने से रोमन चर्च और वाल्डो के अनुयायियों के बीच दरार और बढ़ गई। ल्योन के गरीबों को बहिष्कृत करने के पोप के फैसले के खिलाफ बचाव के तौर पर धर्मग्रंथों का हवाला देने से पोप के मसीह के प्रतिनिधि के तौर पर अधिकार को पूरी तरह से खत्म करने का सुझाव दिया गया, जो रोमन कैथोलिक चर्च के अनुसार मसीह के एकमात्र सच्चे प्रवक्ता थे। यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि वाल्डो ने पोप के अधिकार को हड़पने की कोशिश नहीं की।

पूरे समय, उनका मुख्य उद्देश्य अपने आह्वान का ईमानदारी से पालन करना और चर्च के जीवन में आम लोगों के लिए अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की तलाश करना था। 1184 में बहिष्कार के परिणामस्वरूप ल्योन के गरीबों को फ्रांस के ल्योन से निर्वासित कर दिया गया था। परिणामस्वरूप, वे यूरोप में लगातार बढ़ते दायरे में जोड़े में यात्रा करने लगे, अगले 30 वर्षों में दक्षिणी फ्रांस से ऑस्ट्रिया और जर्मनी के कुछ हिस्सों में व्यापक क्षेत्र में प्रचार किया।

बहिष्कृत किए जाने का मतलब था कि वाल्डेन्सियनों को तब तक पूजा और आस्था के समुदाय में भागीदारी से प्रतिबंधित कर दिया गया जब तक कि वे सार्वजनिक रूप से अपने तरीकों की गलती को स्वीकार नहीं कर लेते। लेकिन रोमन चर्च और वाल्डेन्सियन के बीच मतभेद बढ़ते रहे। 1215 में, चौथी लेटरन परिषद में, पोप इनोसेंट III के नेतृत्व में चर्च ने सभी वाल्डेन्सियनों को विधर्मी करार दिया।

इसने आधिकारिक तौर पर वाल्डो के अनुयायियों को चर्च का दुश्मन बना दिया। रोमन कैथोलिक पदानुक्रम के अनुसार, उनके विधर्मी विश्वासों को जड़ से उखाड़ फेंकना और पूरी तरह से समाप्त करना था, और उन्हें अपने विधर्म को त्यागना था या उत्पीड़न और मृत्यु का सामना करना था। 1215 से 1230 तक, कैथोलिक बिशप और कैथोलिक मठों के सिस्टरियन ऑर्डर के भिक्षुओं को पहली बार ल्योन के गरीबों से जुड़े मुद्दों को संबोधित करने का काम सौंपा गया था।

हालांकि, दो दशकों के बाद, बिशप और सिस्टरियन भिक्षुओं ने खुद को विधर्मियों के प्रति नरम साबित कर दिया था। परिणामस्वरूप, 1231 में, वाल्डेन्सियनों की धमकी के जवाब में, रोमन कैथोलिक चर्च ने डोमिनिक नामक एक पुजारी को एक नए स्थापित डोमिनिकन आदेश, ऑर्डो प्रेडिकेटरम के नेता के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त किया, जिसे उपदेश आदेश भी कहा जाता है। डोमिनिकन को पहली बार रोमन कैथोलिक पदानुक्रम द्वारा वाल्डेन्सियन विधर्मियों को सार्वजनिक बहस या उपदेश में शामिल करने का अधिकार दिया गया था।

यह रोमन कैथोलिक चर्च के धर्मशास्त्र को निर्देशित करने वाले तर्क और तर्क को सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत करके विधर्मियों को वापस अपने पाले में लाने का एक प्रयास था। हालांकि, यह

रणनीति, जब ल्योन के गरीबों के खिलाफ निर्देशित की गई, तो पूरी तरह से अप्रभावी साबित हुई। जनता ने पहचान लिया कि डोमिनिकन बिना किसी करुणा के बाइबिल का संदेश दे रहे थे।

जनता ने उन्हें बिना किसी प्रेम के प्रदर्शन के कट्टर धार्मिक संदेशवाहक के रूप में देखा। आम लोगों ने वाल्डेन्सियनों द्वारा दर्शाए गए विपरीत उदाहरण को पहचाना, जिन्हें आम लोगों ने आस्था और विश्वास में रूढ़िवादी के रूप में पहचाना जबकि साथ ही उनके दिलों में बुनियादी मानवीय अच्छाई और प्रेम के गुण थे, जिन्हें वे वास्तव में मसीह के रूप में व्यक्त करते थे। आम लोगों ने यह भी माना कि करुणा का संचार करने वाले वाल्डेन्सियन पादरियों का संदेश उनके जीवन में बहुत अधिक स्पष्ट रूप से एकीकृत था और रोमन चर्च द्वारा अपने समृद्ध और धर्मपरायण बिशपों और दंडात्मक डोमिनिकन के साथ समाज को दी गई विनम्रता और करुणा के माध्यम से व्यक्त किया गया था।

वाल्डेन्सियनों को कैथोलिक चर्च में वापस लाने के लिए उनसे बहस करने के दृष्टिकोण की विफलता के साथ, डोमिनिकन को जल्द ही पोप द्वारा वाल्डेन्सियन विधर्मियों के उत्पीड़न को अंजाम देने का आदेश दिया गया। चर्च ने 1199 में कैथोलिक चर्च को सभी वाल्डेन्सियन संपत्ति पर कब्जा करने का अधिकार दिया था और अक्सर विधर्मियों के रूप में पहचाने जाने वालों को मौत की सजा दी जाती थी। 1250 के दशक तक, डोमिनिकन की प्राथमिक भूमिका सभी विधर्मियों पर मुकदमा चलाना और उन्हें नष्ट करना था, और रोम द्वारा उन्हें निर्दयी जांच को अंजाम देने के लिए संगठित किया गया था।

पोप ने सभी जिज्ञासुओं को संचालन के व्यापक मैनुअल प्रदान किए जो सभी प्रकार के विधर्मियों को मानकीकृत और वर्गीकृत करते थे। यह चर्च के पहचाने गए दुश्मनों से समाज को मुक्त करने के लिए अब तक का सबसे संगठित और दूरगामी प्रयास था। इस प्रकार वाल्डेन्सियन विश्वासियों का दुखद और शर्मनाक उत्पीड़न शुरू हुआ, जो अगले 600 वर्षों तक अलग-अलग स्तरों पर जारी रहेगा।

फिर भी, अगर वाल्डेन्सियन का उदय नहीं होता और मसीह की शिक्षाओं को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के उनके प्रयास नहीं होते, तो रोमन कैथोलिक चर्च को मध्य युग में अपने प्रचार के तरीके को बदलने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ता। ल्यों के गरीबों के एकीकरण की शिक्षा और उनके मसीह-जैसे कार्यों ने रोमन कैथोलिकों को चर्च में अपने काम करने के तरीके में बड़े बदलाव अपनाने के लिए मजबूर किया। कैथोलिकों द्वारा लोगों की भाषा में प्रचार करने पर नए सिरे से ध्यान दिए जाने के परिणामस्वरूप 1215 में ऑर्डर प्रिडिकेटोरियम की स्थापना हुई, जिसने न केवल डोमिनिकन बल्कि फ्रांसिस्कन और बेनेडिक्टिन ऑर्डिनेंस को भी लोगों की भाषा में प्रचार करने का अधिकार दिया।

इस प्रतिक्रिया ने रोमन कैथोलिक चर्च के लिए आम लोगों के साथ अपने संबंधों में एक नया मानक स्थापित किया, जिससे रोमन कैथोलिक चर्च में बदलाव आया। आज, हम अपनी भाषा में प्रचारित परमेश्वर के वचन को सुनने और समझने के अवसर को हल्के में लेते हैं, लेकिन हम वाल्डेन्सियन और उनके स्पष्ट संदेश और यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रति वफादार गवाह के

बहुत आभारी हैं। वाल्डो के अनुयायियों ने प्रत्येक अनुयायी के शिष्यत्व के हिस्से के रूप में विश्वास की घोषणा करने के आह्वान को एकीकृत किया।

पिता और पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम पर। आमीन।

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपनी शिक्षा में हैं। यह सत्र 3 है, एक परिवर्तनकारी साक्षी, उपदेश की भूमिका।